Q. अभिरुचि से क्या समझते हैं? स्कूल में बालकों की अभिरुचि को प्रभावित करनेवाले कारकों का वर्णन करें?

Ans. अभिरुचि एक ऐसा शब्द है जिसका प्रयोग ध्यान, जिज्ञासा, प्रेरणा, इच्छा आदि के समानांतर किया जाता था। लेकिन शिक्षा मनोवैज्ञानिकों के अनुसार (ड्रीवर एवं वालरस्टीन) ने सामान्यतः इसका प्रयोग दो अर्थों में किया है। कार्यात्मक अर्थ तथा संरचनात्मक अर्थ। कार्यात्मक अर्थ में अभिरुचि से तात्पर्य एक ऐसे भाव की अनुभूति से होता है जिसे सार्थक अनुभूति कहते हैं। संरचनात्मक अर्थ में अभिरुचि से तात्पर्य व्यक्ति के व्यक्तित्व के एक ऐसे अर्जित या जन्मजात तत्व से होता है जिसके कारण उसमें किसी वस्तु के प्रति एक सार्थक अनुभूति उत्पन्न होती है। "रॉस" के अनुसार अभिरुचि बालकों में एक प्रेरणात्मक बल के रूप में कार्य करता है जिसके कारण वह किसी वस्तु को अन्य वस्तुओं से अलग कर उस पर विशेष ध्यान देता है। अतः अभिरुचि का संबंध ध्यान से होता है।

अनेक शिक्षा मनोवैज्ञानिकों द्वारा स्कूल में बालकों की अभिरुचि का अध्ययन किया गया है और इन अध्ययनों से पता चलता है कि प्रारंभ में बालक स्कूल जाना गर्व की बात

Scanned with CamScanner

समझते हैं और वे स्कूली शिक्षा में काफी अभिरुचि लेते हैं परंतु बाद में जब वे उच्च स्कूल में पहुँचते हैं तो उनकी अभिरुचि घटने लगती है। जैसे-जैसे बच्चे उच्च कक्षाओं की ओर अग्रसर होते हैं, वैसे-वैसे उनकी अभिरुचि सीमित होती जाती है और उनकी अभिरुचि कक्षा के अंदर शैक्षिक क्रियाओं में घटती जाती है तथा कक्षा के के बाहर की ओर :- शैक्षिक क्रियाओं जैसे → खेलकूद आदि में बढ़ती जाती है।

~~अतः~~ बालकों के अभिरुचि का विकास जिन कारकों से प्रभावित होता है वे निम्नांकित हैं।

(1) प्रारंभिक स्कूल की अनुभूतियाँ :-

वैसे बालक जो शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्कूल जाने के लिए तैयार रहते हैं, उन्हें स्कूल में समायोजन करने में सफलता मिलती है तथा ऐसे बालकों के प्रारंभिक स्कूल की अनुभूतियाँ आनंददायक होती हैं। जिससे उनमें शैक्षिक अभिरुचि तेजी से पनपती है लेकिन इसके विपरीत जब बालक अपने माता-पिता या अभिभावक के दबाव से स्कूल भेजे जाते हैं। यानि बालक शारीरिक एवं मानसिक रूप से तैयार नहीं रहने के बावजूद उन्हें भेजे जाते हैं तो उन्हें वहाँ समायोजन करने में काफी दिक्कत होती है और धीरे-धीरे उनकी शैक्षिक अभिरुचि घटती चली जाती है।

Scanned with CamScanner

Real Page No. .... Date ....

(2) माता - पिता का प्रभाव :→

माता - पिता का प्रभाव सामान्य रूप से स्कूल के प्रति बालकों की मनोवृत्ति पर पड़ता है। माता - पिता का प्रभाव, शिक्षा के प्रति उनकी मनोवृत्ति, विभिन्न स्कूल विषयों के प्रति मनोवृत्ति तथा अन्य शिक्षकों के प्रति एक मनोवृत्ति विकसित होने मे काफी पड़ता है। इस प्रभाव के कारण ही छात्र, शिक्षकों, स्कूल विषयों एवं अपने अध्ययन के प्रति अभिरुचि विकसित कर पाते है। यदि यह प्रभाव अच्छा होता है तो बालकों की अभिरुचि इन सबके प्रति अच्छी एवं आनंद-दायक होती है।

(3) भाई - बहनों की मनोवृत्ति :→

बालकों मे शिक्षा तथा अध्ययन विषय के प्रति अरुचि के विकास मे बड़े भाई - बहनों की मनोवृत्ति का भी प्रभाव अधिक पड़ता है। यदि भाई - बहनों की मनोवृत्ति किसी विषय या शिक्षक के प्रति प्रतिकूल होती है तो इसका प्रभाव बालक पर भी पड़ता है और उनमें भी वैसी ही मनोवृत्ति विकसित हो जाती है। ऐसे बालक भी उन विषयों या शिक्षकों के प्रति नापसंदगी दिखाना प्रारंभ कर देते है।

(4) साथी-संगी की मनोवृत्ति :-

बालकों की अभिरुचि उनके साथी संगी की मनोवृत्ति द्वारा भी प्रभावित होती है। हरलॉक के अनुसार बालक के साथियों की मनोवृत्ति किसी विषय के प्रति प्रतिकूल होती है तो उस बालक की मनोवृत्ति भी उस विषय के प्रति वैसी ही हो जाती है और वह बालक भी उस विषय में अन्य विषयों की तुलना में कम अभिरुचि दिखाना प्रारंभ कर देता है।

(5) शैक्षिक सफलता :-

बालकों की अभिरुचि पर शैक्षिक सफलता का विशेष प्रभाव पड़ता है। यदि किसी बालक को स्कूल में लगातार शैक्षिक सफलता मिलती जाती है तो इससे उसमें आत्म-संतोष उत्पन्न होता है और उनकी अभिरुचि शैक्षिक क्रियाकलाप एवं अध्ययन में अधिक बढ़ जाती है। लेकिन यदि अकसर शैक्षिक असफलता हाथ लगती है तो इससे उसके अहं (ego) पर चोट पहुँचती है और ऐसे में स्कूल एवं शिक्षा के प्रति अरुचि विकसित होने लगती है।

(6) कार्य के प्रति मनोवृत्ति :-

यदि बालक का ~~भरण~~ पालन-पोषण ऐसे वातावरण में हुआ होता है जहां उसे खेलने-कूदने

Real Page No. .... Date ....

की अधिक स्वतंत्रता होती है तो ऐसे बालकों की अभिरुचि स्कूल की क्रियाओं के प्रति अधिक नहीं होती है, ऐसे मे स्कूल में दूसरा ही काम करना पड़ता है और उसे स्कूल उन्हें एक बंधन के समान लगता है परंतु यदि उनकी स्कूल का माहौल वैसा ही हुआ जैसा कि उनके घर का वातावरण है तो ऐसी स्थिति में स्कूल को अधिक पसंद करने लगते हैं और स्कूल की क्रियाओं मे अधिक से अधिक अभिरुचि दिखाने लगेंगे।

(7) शिक्षक छात्र संबंध :-

बच्चे स्कूल मे दी जानेवाली शिक्षा में कितनी अभिरुचि दिखाते है यह इस बात पर निर्भर करता है कि उनकी शिक्षकों के साथ व्यक्तिगत अनुभूतियाँ (Personal experiences) कैसी है। यदि उनकी व्यक्तिगत अनुभूतियाँ दुःखद है, तो बालक की शैक्षिक अभिरुचि कम हो जाएगी। परंतु यदि वैसी अनुभूतियाँ सुखकर है तो इससे उनकी शैक्षिक अभिरुचि में वृद्धि होगी।

(8) स्कूल का सांवेगिक वातावरण :-

स्कूल का सांवेगिक वातावरण। शिक्षकों की मनोवृत्ति एवं शिक्षकों का प्रतिपादित अनुशासन के नियमों से प्रभावित होता है। जैसे शिक्षक जो कक्षा मे प्रजातंत्रात्मक

Scanned with CamScanner

ढंग से बालकों को पढ़ाते हैं तथा आकर्षक तथा मनोरंजक ढंग से बालकों के साथ अनुक्रिया करते हैं, छात्रों में स्कूल एवं शिक्षा के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करने में सफल होते हैं। यदि शिक्षक कक्षा में अत्यधिक अनुशासात्मक ढंग से Permissively छात्रों के साथ व्यवहार करते हैं एवं उनके पढ़ाने का ढंग अधिक ही उबाऊ होता है तो छात्रों में शिक्षा के प्रति अभिरुचि की कमी आ जाती है और ऐसे छात्र प्रायः स्कूल में अपने आपको दूर रखने का कोई-न-कोई बहाना ढूंढ निकालने में समर्थ हो पाते हैं। ऐसे छात्रों की दिलचस्पी स्कूली शिक्षा में न के बराबर होती है।